ख़ैमा

मीराल अल-तहावी

अनुवाद
अर्जुमंद आरा

ख़ेमा

(अरबी भाषा के 101 बेहतरीन उपन्यासों में शामिल मिस्री उपन्यास)

ख़ेमा

(अरबी भाषा के 101 बेहतरीन उपन्यासों में शामिल मिस्री उपन्यास)

मीराल अल-तहावी

अनुवादक

अर्जुमंद आरा

अनुज्ञा

मूल कृति : अल-ख़िबा (मिस्री/अरबी, 1996)
उपन्यासकार : मीराल अल-तह़ावी
The Tent (1998) by Miral El-Tahawy
हिंदी अनुवाद : अर्जुमंद आरा

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© अर्जुमंद आरा

प्रथम संस्करण : 2023

ISBN 978-81-19019-38-0

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110032
e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com
फोन : 011-45506552, 7291920186, 9350809192
www : anuugyabooks.com

आवरण संयोजन : राधेश्याम

मुद्रक

अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

KHEMA (Egyptian Novel) *by* Miral El-Tahawy
***Hindi Translation by* Arjumand Ara**

मेरे जिस्म के नाम...
ख़ेमे की ऐसी खूँटी जो रेगिस्तान में गाड़ दी गयी

अनुवादक की ओर से

'ख़ेमा' मिस्र के रेगिस्तान में रहने वाले बद्दू क़बीले के एक कुलीन परिवार में जन्मी फ़ातिमा की कहानी है। फ़ातिमा दम घोंटने वाली परम्पराओं की क़ैदी और चारदीवारी के अन्दर साँस लेने वाले महिला संसार का अंग है– ऐसी चारदीवारी का हिस्सा है जहाँ औरत या तो शादी-ब्याह जैसे ख़ास अवसरों पर ही बाहर निकलती या अन्दर जाती है या फिर मृत्योपरान्त। इस वातावरण में बचपन ही से 'बाहर' की दुनिया को देखने की लालसा रखने वाली नन्ही फ़ातिमा पेड़ों की फुलंगों पर चढ़-चढ़ कर बाहर की दुनिया को झाँकती रहती है, और ख़ानाबदोश क़बीलों की या ग्रामीण महिलाओं को आज़ादी के साथ दिनचर्या में व्यस्त आते-जाते देखा करती है और विचलित होकर अपने यथार्थ का आभास करते-करते अपने ही अन्दर ऐसा संसार रचने लगती है जो उसे कल्पना के पंखों पर बिठा कर विशाल मरुभूमि में स्वतन्त्र विचरण के लिए छोड़ देता है। फ़ातिमा की कल्पना से जन्म लेने वाले क़िस्से-कहानियाँ इस उपन्यास के ताने-बाने के वे अनुपम और प्रभावी अंग हैं जो विभिन्न पात्रों और प्रतीकों की सहायता से बार-बार स्वतंत्रता की अभिलाषा को इंगित करते हैं। आज़ादी की स्वाभाविक लालसा क्या फ़ातिमा को एक नया जीवन देगी? इस अटूट विश्वास के बावजूद कि "जिसके पास पंख हों उसके लिए आसमान दूर नहीं होता", फ़ातिमा भूल गयी थी "फैला हुआ विशाल रेगिस्तान एक छलावा है और हवाएँ नितांत निर्मम।" ऐसी विद्रोही आत्मा की नियति मरुभूमि में विलीन होने के अलावा और क्या हो सकती है?

इस कहानी की पृष्ठभूमि को समझने के लिए यह जानना अनावश्यक न होगा कि मिस्र के पूर्वी मरुस्थलीय क्षेत्र में अरब बद्दू हज़ारों वर्षों से आ-आकर बसते रहे हैं। इस इलाक़े के अरब बद्दुओं और नील के डेल्टा में बसे किसानों के सम्बन्ध सैकड़ों वर्ष पुराने हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में नील नदी का पूर्वी डेल्टा यहाँ के कृषकों सहित कुछ बद्दू सरदारों के अधीन कर दिया गया था। उनकी